S. S. College Jehanabad
B.A. Part-I Psychology (Subsidiary)
Teacher – A. K. Sinha Date 18.02.21
Topic – Gestalt Theory of Perception पृष्ठ - 3

पृष्ठ - 2 से आगे का भाग

Perceptual organization अथवा Gestalt Theory of Perception जैसा कि पूर्व में वर्णन किया जा चुका है कि प्राणी के द्वारा किसी वस्तु, परिस्थिति अथवा उद्दीपन का प्रत्यक्षीकरण समग्र रूप (As a whole) होता है। इसके प्रत्यक्षीकरण की समग्रता कुछ नियमों पर आधारित हैं जो कि गेस्टाल्टवादी मनोवैज्ञानिकों द्वारा प्रतिपादित की गई हैं। इन्हें संगठन के नियम भी कहा जाता है। इन नियमों में कुछ उद्दीपन से सम्बन्धित होते हैं तो कुछ प्रत्यक्षीकरण करनेवाले व्यक्ति से। इन्हें क्रमशः परिधीय नियम (Peripheral Laws) तथा केन्द्रीय नियम (Central Laws) के नाम से सम्बोधित किया जाता है। इन दो श्रेणियों में इनके नियमों का उल्लेख यहाँ अपेक्षित है :—

(1) संगठन के परिधीय नियम (Peripheral Laws) :—
प्रत्यक्षीकरण के संगठन से सम्बन्धित उस श्रेणी के के नियम निम्नांकित हैं :—

(i) समानता का नियम (Laws of Similarity) :—
संगठन के इस नियम के अनुसार समान आकृति वाले उद्दीपन का प्रत्यक्षीकरण एक साथ होता है, क्योंकि आपस में मिलती हुई उद्दीपनों का सम्बन्ध जल्द स्थापित होता है। इसे एक चित्र द्वारा आसानी से समझा जा सकता है। दिये गये चित्र में दो भिन्न आकृति वाले यथा त्रिभुज और वृत्त।

△ ● △

● △ ●

इनमें समान आकृति वाले त्रिभुजों को प्रत्यक्षित एक साथ एक श्रेणी के हो जाते हैं जबकि वृत्ताकार गोलों का प्रत्यक्षीकरण अलग एक साथ होता है। इस प्रकार संगठनात्मक प्रत्यक्षीकरण में समानता का नियम लागू होता है।

(ii) समीपता का नियम (Laws of Proximity) :- संगठनात्मक प्रत्यक्षीकरण के इस नियम के अनुसार समीपवाले उद्दीपनों का प्रत्यक्षीकरण एक साथ होता है। यहाँ पर चित्र में लम्बवत् छः रेखाओं को आपस में तीन जगह सजाया गया है। या यों कहें कि

a b c तीन रेखाओं को पुनः a b c तीन रेखाओं के बगल-बगल में खींचा गया है। यहाँ पर छः रेखाओं का अलग-2 प्रत्यक्षीकरण होकर तीन जोड़ों के रूप में (a, b, c) प्रत्यक्षीकरण होता है। यह समीपता के नियम के आधार पर होता है।

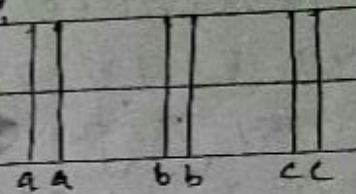

(iii) पूर्णता का नियम (Law of closure) : इस नियम के आधार पर किसी उद्दीपन को पूर्ण आकार रूप में संगठित करने ... की क्रिया

IMAGE

प्राणी के प्रत्यक्षीकरण में पाया जाता है। इसमें उद्दीपन में जिन तत्वों की उपस्थिति नहीं होती है उसे भी सम्मिलित कर लिया जाता है। जैसे ऊपर के बगल में शब्द के आकृति को देखें के पूर्ण नहीं है फिर भी उसका प्रत्यक्षीकरण प्राणी द्वारा पूर्ण उद्दीपन (Image) के रूप में होता है इस प्रकार की संगठनात्मक प्रक्रिया पूर्णता के नियम पर आधारित है।

(iv) निरंतरता का नियम :- (Law of Continuity) संगठन के इस नियम के आधार पर जिन उद्दीपनों में निरंतरता होती है वे संगठित होकर एक आकृति के रूप में प्रत्यक्षित होते हैं। इस निरंतरता के अभाव में उद्दीपन संगठित नहीं हो पाता है।

यथा बगल के चित्र से स्पष्ट होता है।

चित्र में दिखाए गये कुछ बिन्दुओं को निरंतर इस प्रकार रखा गया है कि वे एक अक्षर (अंग्रेजी के) के रूप में दिखाई पड़ता है। ये आपस में इस तरह सजाये गये हैं कि निरंतरता के कारण उनका प्रत्यक्षीकरण A B C अलग-अलग अक्षरों के रूप में होता है।

(V) :- (Law of Good Figure) उत्तम आकृति का नियम :-

:— संगठनात्मक प्रत्यक्षीकरण के इस नियम के अनुसार उत्तम आकृति का प्रत्यक्षीकरण आसानी से शीघ्र ही हो जाता है बनिस्पत कि अनुत्तम आकृति वाले उद्दीपन का। उदाहरण स्वरूप बगल के चित्र को देखने से स्पष्ट हो जाता है कि जो तीर पूर्ण एवं सुडौल है उसका प्रत्यक्षीकरण पहले होता है और अनुत्तम आकृति वाले रेखाओं का प्रत्यक्षीकरण बाद में होता है। कारण यह है कि अधूरी आकृति (incomplete figure) मानसिक संतुलन को भंग कर देता है जबकि complete figure मानसिक संतुलन को बनाये रखता है। यही कारण है कि ऊपर के चित्र A और B दो अलग-2 वाणरेखाओं का प्रत्यक्षीकरण A का आदर्श आकृति के रूप में होता है तथा B का विकृत आकृति के रूप में।

(VI) सामान्य दिशा का नियम (Law of Common Fate) :— संगठनात्मक प्रत्यक्षीकरण का एक नियम यह भी है कि समान दिशा में रखे उद्दीपनों अथवा उत्तेजनाओं का प्रत्यक्षीकरण एक साथ होता है। इसे बगल के चित्र से और अधिक स्पष्ट किया जा सकता है। यहाँ पर बिन्दुओं के एक समूह का प्रत्यक्षीकरण धनु (Arc) के रूप में होता है जबकि बिन्दुओं के दूसरे समूह का प्रत्यक्षीकरण एक सरल रेखा के रूप में होता है। यह एक दिशा विशेष में रखे जाने के कारण ही होता है।

2. संगठनात्मक प्रत्यक्षीकरण का केन्द्रीय नियम
Central Laws of Perceptual organization:-
गेस्टाल्टवादी मनोवैज्ञानिकों ने प्रत्यक्षीकरण के संगठनात्मक प्रक्रिया के दूसरे श्रेणी के नियमों का प्रतिपादन किया है जो प्रत्यक्षीकरण करने वाले व्यक्ति में निहित होते हैं। जिसे केन्द्रीय नियम की संज्ञा प्रदान की गई है। ये नियम निम्नांकित हैं।

(i) अनुकूल प्रवृत्ति या मानसिक वृत्ति (Mental set):- किसी भी उद्दीपन के तत्वों का संगठन प्रत्यक्षणकर्ता के मानसिक वृत्ति या तैयारी पर निर्भर करता है। इसके कारण व्यक्ति Peripheral Law के विरुद्ध भी उसे संगठित रूप में प्रत्यक्षीकरण कर लेता है। इसी Mental set के कारण Rorschach द्वारा बनाए गये Ink Blot परीक्षण में कुछ आकृतियों को परीक्षणकर्ता अलग-अलग आकृति को प्रत्यक्षीकरण कर लेता है जिसके आधार पर उसके व्यक्तित्वों का अध्ययन तथा विश्लेषण किया जाता है।

(ii) अर्थगर्भिता का नियम (Law of Pregnance) प्रत्यक्षीकरण के संगठनात्मक प्रक्रिया का प्रयास में अर्थगर्भिता का होना भी एक केन्द्रीय नियम के अन्तर्गत आता है। Peripheral Laws के कुछ नियमों; यथा - सुडौलपना, अच्छी आकृति, पूर्णता, निरंतरता आदि, का सम्बन्ध भी अर्थगर्भिता से ही है। इस तरह की प्रवृत्ति-प्राणियों (मानव-प्राणी) में जन्मजात होती है। जिन उत्तेजनाओं की गठ ~~[illegible]~~ तारतम्य विद्यमान रहता है उनका संगठन अपेक्षाकृत आसान हो जाता है।

(iii) पूर्व अनुभव (Past Experience) → प्रत्यक्षीकरण को संगठनात्मक प्रक्रिया में प्राणी या मानव व्यक्ति का पूर्व अनुभव का केन्द्रीय नियम भी कार्य करता है। यथा :— 'RAMISAGOODBOY' का प्रत्यक्षीकरण एक वाक्य (Ram is a good boy) RAM IS A GOOD BOY के रूप में हो जाता है जबकि प्रकृतत: इस वाक्य के सभी Alphabets को एक साथ मिलाकर लिखा गया है जो कि वाक्य संगठन के नियमों को पूरा नहीं करता है फिर भी पूर्व अनुभव के आधार पर ही प्राणी द्वारा उसका प्रत्यक्षीकरण एक वाक्य के रूप में किया जाता है जबकि दूसरे पंक्ति में उसे सही वाक्य के रूप में प्रस्तुत किया गया है। अतः प्राणी या व्यक्ति के द्वारा किया गया संगठनात्मक प्रक्रिया पूर्व अनुभव पर आधारित है।

(IV) प्रेरणात्मक नियम (Motivational Law) :— किसी भी उत्तेजना के प्रत्यक्षीकरण में व्यक्ति में निहित प्रेरणा, मूल्य तथा मनोवृत्ति का समावेश रहता है। यद्यपि गेस्टाल्टवादियों द्वारा उसको काफी महत्व नहीं दिया गया है फिर भी प्रत्यक्षीकरण में ऐसे कई संगठनात्मक प्रमाण मिले हैं यथा :– एक भूखा व्यक्ति द्वारा बना हुआ खाने की वस्तु का प्रत्यक्षीकरण शीघ्र होता है बनिस्पत कि अन्य मौजूद वस्तुओं का। जैसे कि कार्यालय से लौटते समय एक कर्मचारी द्वारा एक बजार के लिखे नम्बर 'GOOD' को Food के रूप में प्रत्यक्षीकरण करना, अतः उसे Hunger रूपी motivation के कारण होना स्वाभाविक जान पड़ता है।